

प्रथम दिवस आवरण FIRST DAY COVER



साहिर लुधियानवी Sahir Ludhianvi

ये देश है वीर जवानों का, अलबेलों का, मस्तानों का,.....



Sahir Ludhianvi

Sahir Ludhianvi was the pen name of Abdul Hayee. He was born on 8th March, 1921 at Ludhiana. Sahir had his early education at Khalsa High School, Ludhiana and later joined the Government College, Ludhiana. While at college, Sahir started to write 'nazams' and 'ghazals' and became immensely popular at a very young age. His most well known and seminal work, 'Talkhiyan', published from Lahore in 1944 brought him instant recognition. Later, he edited Urdu magazines like 'Preet Lari' and 'Shahrah'.

Sahir's poems conveyed rare sensitivity coupled with maturity. His portrayal of emotional dilemmas faced by the poor and the anguished often led people to identify him with the leftists. He was a crusader against society's false and hollow values and developed a style, the hallmark of which was heightened realism. Sahir's poems addressed the fundamental problems of life.

Sahir could not resist the magnetic pull of the film world and shifted to the then Bombay in 1949 to write lyrics for films. One of his first film songs in the 1950 film 'Naujawan', "Thandi Hawayen Lehra Ke Aaye", sung by Lata Manageshkar, an upcoming singer those days, retains its popularity even today. With the success of his songs in the 1951 film 'Baazi', he

became a household name. It was, however, left to Guru Dutt, to fully exploit and portray the range and potential of Sahir in "Pyasaa", in 1957. The famous song from the film 'Naya Daur', "Yeh Desh hai veer Jawano ka..." continues to evoke patriotic fervour even today. Sahir's contribution to the world of literature and arts has been well recognized. He was awarded the Filmfare awards for his lyrics in "Taj Mahal" in 1964 and "Kabhie Kabhie" in 1977. He was also conferred Padmashri.

One of Sahir's last compositions, "Main pal do pal ka shayar hun.....Masruf zamana mere liye kyon waqt apna barbad kare" from the film 'Kabhie Kabhie' pretty much summed up his approach to life. Identified as a people's poet, his down to earth approach and his use of common man's perspective in the fine arts of 'ghazal' and 'nazm', remains irreplaceable.

Sahir Ludhianvi passed away on 25th October, 1980 at the age of fifty nine.

Department of Posts is happy to release a Commemorative Postage Stamp on Sahir Ludhianvi.

Credits:-

Text : Provided by the proponent,
Dr. K.K. Paul

Stamp/FDC/
Cancellation : Nenu Gupta



भारतीय डाक विभाग
Department of Posts
India



साहिर लुधियानवी
SAHIR LUDHIANVI

साहिर लुधियानवी

अब्दुल हयी का उपनाम साहिर लुधियानवी था। उनका जन्म 8 मार्च, 1921 को लुधियाना में हुआ था। साहिर की प्रारंभिक शिक्षा खालसा हाई स्कूल, लुधियाना में हुई और बाद में वे गवर्नमेंट कॉलेज, लुधियाना में पढ़े। कॉलेज के समय से ही साहिर ने 'नज़्म' और 'गज़लें' लिखनी शुरू कर दीं और बहुत ही कम आयु में अत्यधिक लोकप्रिय हो गए। लाहौर से वर्ष 1944 में प्रकाशित उनकी सुप्रसिद्ध और प्रारंभिक कृति 'तल्खियां' से उन्हें तत्काल पहचान मिली। बाद में, उन्होंने 'प्रीतलड़ी' और 'शहराह' जैसी उर्दू पत्रिकाओं का संपादन किया।

साहिर की कविताओं में असाधारण संवेदनशीलता और परिपक्वता थी। उनके द्वारा किए गए निर्धन और व्यथित लोगों की भावनात्मक दुविधाओं के चित्रण से, अक्सर लोग उन्हें वामपंथी समझते हैं। वे समाज के झूठे और खोखले मूल्यों के विरुद्ध थे और उन्होंने अपनी एक अलग शैली विकसित की जिसमें उच्च यथार्थवाद स्पष्टतः परिलक्षित था। साहिर की कविताओं में जीवन की मूल समस्याओं का चित्रण है।

साहिर फिल्मी दुनिया के आकर्षण से बच नहीं पाए और 1949 में फिल्मों में गीत लेखन के लिए तत्कालीन बम्बई में बस गए। 1950 की फिल्म 'नौजवान' जोकि उनकी पहली फिल्म थी, का एक गाना 'ठंडी हवाएं लहरा के आए' जोकि उस समय की उभरती गायिका लता मंगेशकर द्वारा गाया गया था, आज भी अपनी लोकप्रियता बनाए हुए है। 1951 की फिल्म 'बाज़ी' के उनके गानों की सफलता ने उनकी एक पहचान कायम कर दी। तथापि, 1951 की फिल्म 'प्यासा' में

साहिर की विविधता और क्षमता के पूर्णतः प्रयोग एवं चित्रण का श्रेय गुरुदत्त को जाता है। 'नया दौर' फिल्म का लोकप्रिय गाना 'यह देश है वीर जवानों का....' आज भी देशभक्ति की भावनाएं जागृत करता है। साहित्य और कला की दुनिया में साहिर का योगदान सर्वमान्य है। उन्हें फिल्म 'ताज महल' और 'कभी कभी' में लिखे गीतों के लिए क्रमशः 1964 एवं 1977 में फिल्मफेयर अवार्ड मिला। उन्हें पद्मश्री से भी सम्मानित किया गया।

साहिर की आखिरी रचनाओं में से एक गीत 'मैं पल दो पल का शायर हूँ.... मसरूफ ज़माना मेरे लिए क्यों वक्त अपना बरबाद करे', जो कि फिल्म 'कभी कभी' से है, जीवन के प्रति उनके दृष्टिकोण का सही द्योतक है। जन कवि के रूप में पहचान बनाने वाले साहिर का जीवन के प्रति यथार्थपरक दृष्टिकोण और 'गज़ल' और 'नज़्म' जैसी ललित कलाओं में आम आदमी का नजरिया अद्वितीय है।

साहिर लुधियावनी का 25 अक्टूबर, 1980 को 59 वर्ष की आयु में देहांत हो गया।

डाक विभाग साहिर लुधियानवी पर स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :-

पाठ : डा. के. के. पॉल, प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध सामग्री

डाक-टिकट /

प्रथम दिवस आवरण / : नीनू गुप्ता

विरूपण



तकनीकी आंकड़े TECHNICAL DATA

जारी करने की तारीख : 8 मार्च, 2013
Date of Issue : 8 March, 2013

मूल्यवर्ग : 500 पैसा
Denomination : 500 p

मुद्रित डाक-टिकटें : 3.1 लाख
Stamps Printed : 0.31 Million

मुद्रण प्रक्रिया : वेट ऑफसेट
Printing Process : Wet Offset

मुद्रक : प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer : Security Printing Press, Hyderabad

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण त सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights v respect to the stamp, first day cover and information brochure r with the Department.